संपादकीय

आयुष अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र में क्षमता निर्माण

समय-समय पर क्षमता निर्माण एक संगठन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यथासमय अपने लक्ष्यों और गतिशीलता को प्राप्त करने में मदद करता है। स्वास्थ्य संरक्षण क्षेत्र और अनुसंधान क्षेत्र के बदलते परिदृश्य में चिकित्सा क्षेत्र में मौजूदा मानव संसाधनों को नियमित रूप से अद्यतन और उन्नयन करना भी नवोदित स्वास्थ्य कर्मियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के समान महत्वपूर्ण है।

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् आयुर्वेद में अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करने के साथ ही आयुष मंत्रालय के तहत क्षमता निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। हाल ही में मंत्रालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त आयुष पी. एच डी. फेलोशिप/एसआरएफ योजना की शुरुआत की है, जिसके लिए आयुष नेट प्रवेश परीक्षा ली जाती है। समाज को प्रभावी पंचकर्म चिकित्सा सेवा प्रदान करने हेतु प्रशिक्षित पंचकर्म सहायकों का संख्याबल बढ़ाने के लिए परिषद् अपने दो संस्थानों – केन्द्रीय आयुर्वेदीय हृदयरोग अनुसंधान संस्थान, पंजाबी बाग, नई दिल्ली तथा राष्ट्रीय आयुर्वेदीय पंचकर्म अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुत्ति में पंचकर्म सहायक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी सुचारु रुप से चला रही है।

आयुष मंत्रालय ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी (आई टी) कौशल के उन्नयन और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा में आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास को बढ़ावा देने के लिए आयुष व्यावसायिकों के प्रशिक्षण के लिए सी-डैक, पुणे के साथ मिलकर काम किया है। चिकित्सालय अभिलेख प्रबंधन की प्रक्रिया को स्वचालित करने के लिए 'आयुष-चिकित्सालय सूचना प्रबंधन प्रणाली' (ए-एचआईएमएस) के सुचारु क्रियान्वयन हेतु आयुष व्यावसायिकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। परिषद् ने हाल ही में 'मानकीकृत-प्रकृति मूल्यांकन मापदंड' और 'आयुर-प्रकृति मूल्यांकन सॉफ्टवेयर' के मुख्य प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, जिसमें मुख्य प्रशिक्षक आगे आयुर्वेद चिकित्सकों को इस साधन का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे ताकि व्यापक रुप में मानक परिणामों की प्राप्ति हो सके। एक अनूठी पहल के तहत, आयुष मंत्रालय ने अपने व्यावसायिकों को विभिन्न सामाजिक प्रसार माध्यम में प्रशिक्षित कर उन्हें सामाजिक प्रसार माध्यमों के प्रति जागरूक किया ताकि एक ऐसे मनुष्यबल का निर्माण किया जा सके जो मंत्रालय तथा परिषद् की गतिविधियों को उन सामाजिक प्रसार माध्यमों द्वारा अद्यतन रूप से प्रसारित करे। साथ ही, परिषद् के महिला वैज्ञानिकों को 'समन्वित वैज्ञानिक परियोजना प्रबंधन' हेतु हैदराबाद स्थित सेंटर फोर आर्गेनाईजेशन डेवलपमेंट में प्रशिक्षित किया गया।

परिषद में भर्ती हुए नए अनुसंधान अधिकारियों की कौशल वृद्धि हेतु "स्टैंडिंग ऑन द शोल्डर्स ऑफ द जाइंट्स" एवं "बेसिक्स ऑफ बायोमेडिकल रिसर्च" पर कार्यशाला जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ, गुरुग्राम में 'प्रपोजल राइटिंग फॉर ग्रांट सबमिशन एंड रिपोर्ट/पेपर राइटिंग' और 'सिस्टेमेटिक रिव्यु एंड मेटाएनालिसिस' जैसे प्रशिक्षण दिए गए। हाल ही में आयुष मंत्रालय ने क्षमता निर्माण जैसे मुख्य मुद्दों पर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के साथ समझौता ज्ञापन किया है। अतः आयुर्वेदिक वैज्ञानिकों के लिए 'पोस्ट डॉक्ट्रल इंटरडिसिप्लिनरी फेलोशिप इन बेसिक साइंसेस्' भी विचाराधीन है।

परिषद अपने वैज्ञानिकों को विभिन्न अनुसंधान प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भी प्रेरित करती है क्योंकि परिषद् का मानना है कि किसी संगठन को आगे बढ़ाने के लिए उसके मनुष्यबल की निरंतर सीखने की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि वह उनके कार्य करने की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

प्रो. वैद्य के. एस. धीमान
मुख्य सम्पादक
आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका
महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

Editorial

Focus on Capacity Building in R&D of AYUSH

Capacity building from time to time plays a pivotal role in strengthening an organization and helps in achieving its goals and sustainability over time. In ever changing scenario in health care sector and research field, regularly updating and upgrading the existing human resources in medical field is as important as providing quality education to budding health personnels.

Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS), being bestowed with a pivotal role in research in ayurveda, focuses on a wide spectrum of capacity building activities under Ministry of AYUSH. Recently, Ministry has started AYUSH PhD Fellowship/SRF Scheme through AYUSH-NET, which is recognized by UGC. The Council is also running Panchakarma Assistant Training Course for Panchakarma Assistant in its two institutions: Central Ayurveda Research Institute for Cardiovascular Diseases (CARICD), New Delhi and National Ayurveda Research Institute for Panchakarma (NARIP), Cheruthuruthy to create a workforce of trained paramedics catering Panchakarma services to the society in an effective manner.

The Ministry of AYUSH has also collaborated with C-DAC, Pune for training of AYUSH professionals for upgradation of IT skills and to infuse recent scientific and technological advances in Indian Traditional Medicine. Another training program was organized to update AYUSH professionals for effective implementation of AYUSH-Hospital Information Management System (A-HIMS) to automate the process of hospital records management. CCRAS has recently inducted training program for Master Trainers on "Standardized Prakriti Assessment Scale and AYUR Prakriti Assessment Software", to create a workforce of trainers, who can further train Ayurveda healthcare professionals for using this tool for better outcomes. In a unique initiative, Ministry of AYUSH has also conducted various Social Media Training Workshops to sensitize its professionals toward social media and to create a workforce maintaining and updating various social platforms of the Ministry and of the Councils. The woman scientists of the Council have also been trained at Centre for Organization Development, Hyderabad for Integrated Scientific Project Management.

Various trainings of research officers are taken up by the Council from time to time like 'Standing on the Shoulders of the giants' and workshop on 'basics of biomedical research' training for Newly recruited ROs at CCRAS; 'Proposal writing for grant submission and Report/Paper writing' and 'Systematic Review and Meta-analysis' training at Indian Institute of Public Health (IIPH), Gurugram. Recently, Ministry of AYUSH has entered into a MoU with CSIR where capacity building is one of the main keypoints; further Post Doctoral Interdisciplinary Fellowship in Basic Sciences for ayurveda scientists is under consideration.

The Council also promotes its scientists to participate in various research trainings and workshops and believes that the constant learning process of the workforce is an important aspect for furthering an organization and enhances its quality to work.

Prof. Vaidya K. S. Dhiman
Editor in Chief
Journal of Research in Ayurvedic Sciences
Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India, New Delhi